The Librarian of Basra

(A True Story from Iraq)

Written and illustrated by Jeanette Winter

बसरा की लाइब्रेरियन

जेनिट विंटर

(ईराक से सच्ची कहानी)

हिन्दी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

"In the Koran, the first thing God said

to Muhammad was 'Read.'"

From the New York Times, July27, 2003

“क़ुरान में खुदा ने मोहम्मद से जो पहली बात कही वो थी, ‘पढ़ो’।”
- आलिया मोहम्मद बकर

Alia Muhammad Baker is the librarian of Basra,

a port city in the sand swept country of Iraq.

रेतीले ईराक में समुद्र के किनारे बसरा नाम का एक बड़ा शहर है।
आलिया मोहम्मद बकर बसरा की लाइब्रेरियन थीं।

Her library is a meeting place for all who love books.

They discuss matters of the world

and the matters of the spirit.

आलिया की लाइब्रेरी सभी पुस्तक प्रेमियों के मिलने का अड्डा थी।
वहां दुनिया-जहां की चर्चा होती थी।
वहां लोग धर्म और आत्मा के बारे में भी चर्चा करते थे।

Until now – now, they talk only of war.

पर यह सब पहले की बात है।
अब तो लोग बस युद्ध और जंग की ही बातें करते हैं।

Alia worries that the fires of war will destroy the books,

which are more precious to her than mountains of gold.

The books are in every language – new books, ancient books,

even a biography of Muhammad that is seven hundred years old.

She asks the governor for permission

to move them to a safe place.

He refuses.

आलिया को डर है कि कहीं जंग की आग में लाइब्रेरी की पुस्तकें न जल जायें।
वो किताबें सोने के पहाड़ों से भी ज्यादा बेशकीमती थीं।
लाइब्रेरी में हरेक भाषा की किताबें थीं। कुछ किताबें नई थीं, कुछ पुरानी।
लाइब्रेरी में मोहम्मद साहिब की एक जीवनी भी थी, जो सात सौ साल पुरानी थी।
आलिया ने लाइब्रेरी को किसी सुरक्षित जगह पर ले जाने के लिये
बसरा के गवरनर की अनुमति मांगी।
गवर्नर ने साफ इंकार कर दिया।

So Alia takes matters into her own hands.

Secretly, she brings books home every night,

filling her car late after work.

तब आलिया ने खुद ही इस काम को करने की ठानी।
काम खत्म होने के बाद वो हरेक रात को छिपकर अपनी कार में किताबें भरती
और फिर उन्हें अपने घर ले आती।

The whispers of war grow louder.

Government offices are moved into the library.

Soldiers with guns wait on the roof.

Alia waits and fears the worst.

जंग की फुसफुसाहट अब तेज गूंज में बदलने लगी।
सरकारी दफ्तरों ने लाइब्रेरी में आकर अपना अड्डा जमाया।
छतों पर बंदूकधारी फौजी पहरा देने लगे।
आलिया बस इंतजार करती रही। उसे एक भयंकर हादसे का डर था।

Then … rumors become reality.

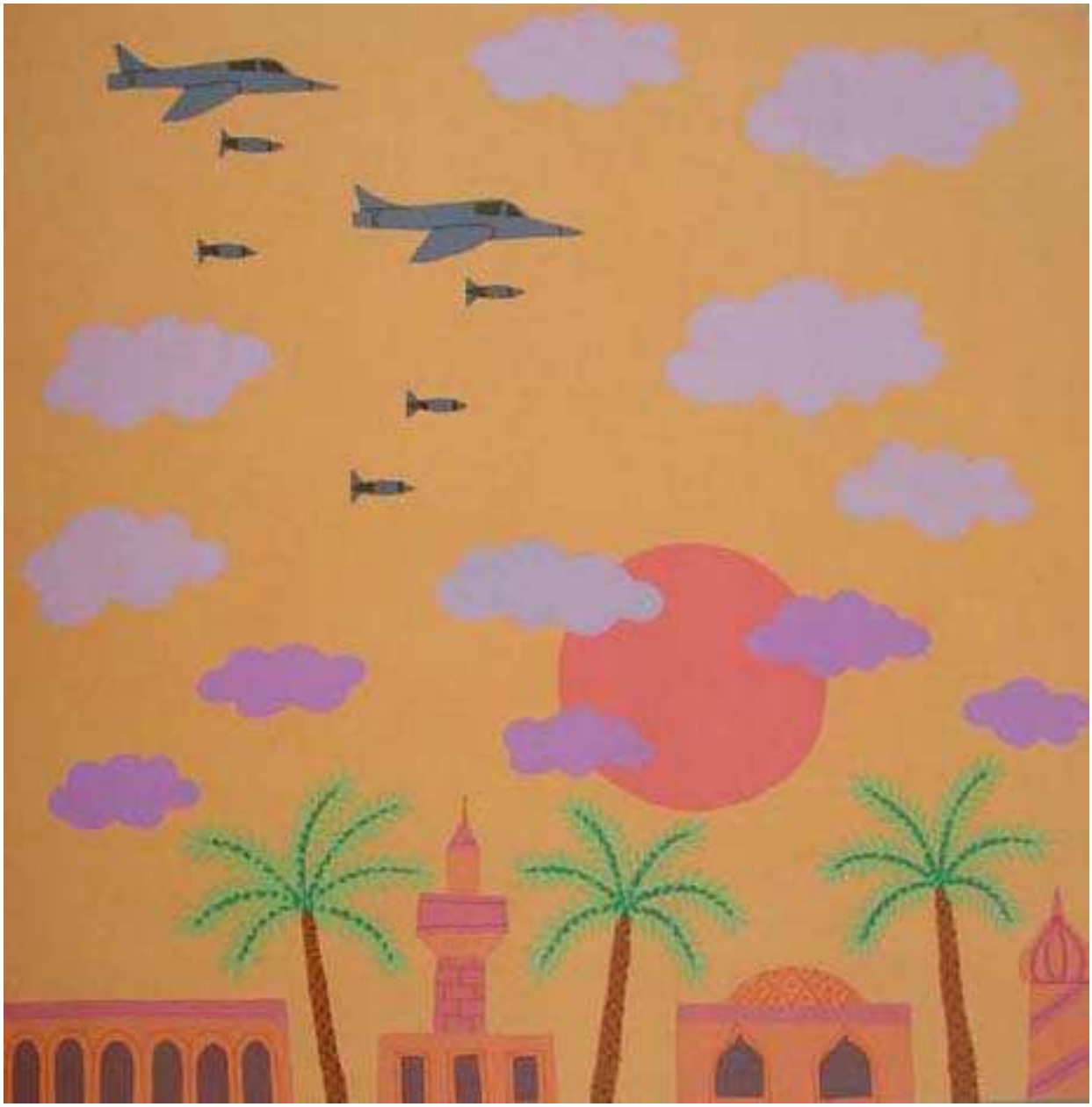

धीरे-धीरे अफवाहें असलियत में बदलने लगीं।

War reaches Basra.

बसरा में जंग छिड़ गयी।

The city is lit with a firestorm of bombs and gunfire.

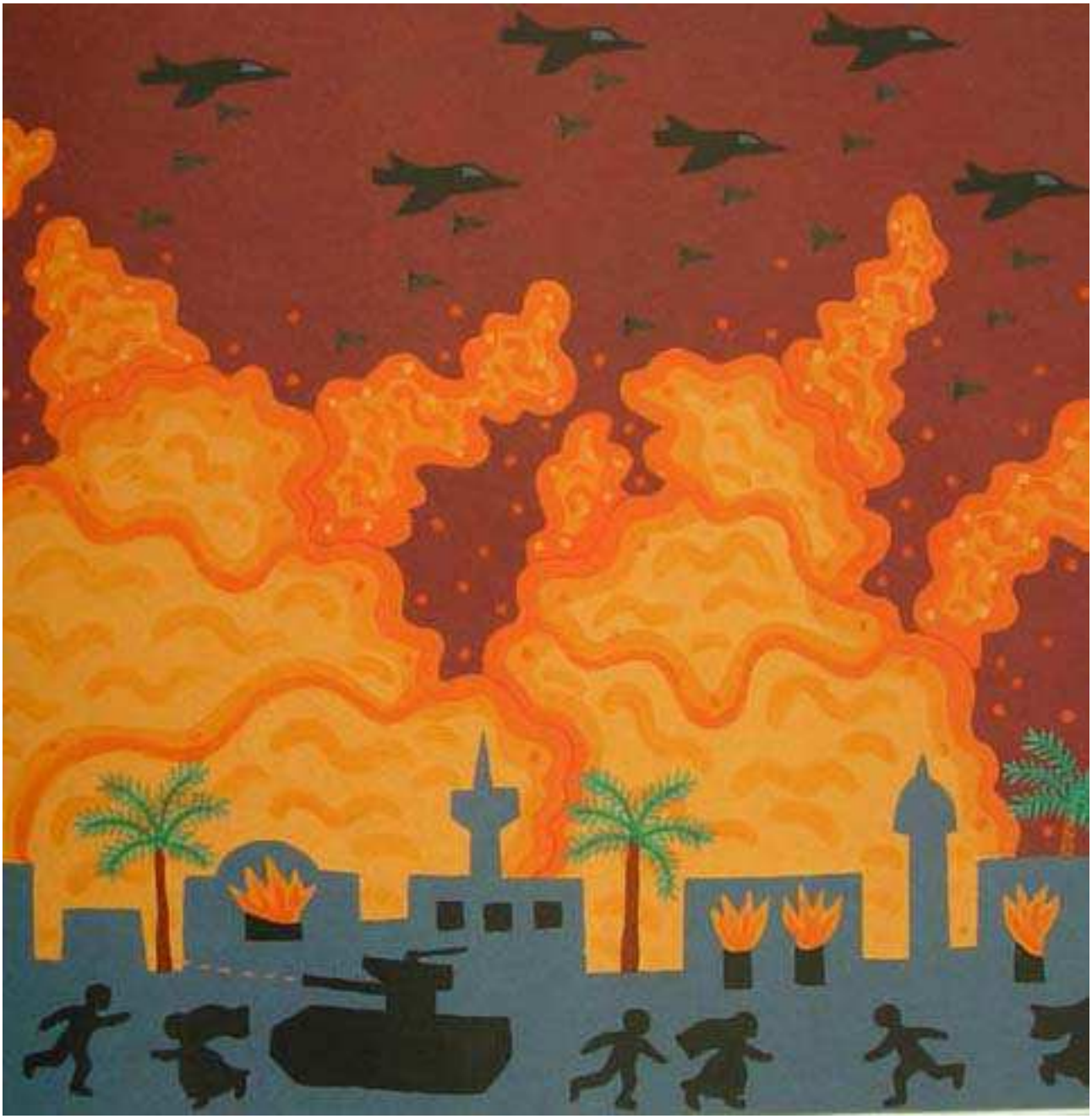

पूरा शहर बम्बों की आग में झुलसने लगा। बंदूकों के धमाके सभी ओर गूंजने लगे।

Alia watches as library workers, government workers

and soldiers abandon the library.

Only Alia is left to protect the books.

धीरे-धीरे सारे लाइब्रेरी में काम करने वाले लोग और सरकारी मुलाजिम
और फौज के सिपाही भी लाइब्रेरी को छोड़ कर चले गये।
आलिया इस नजारे को देखती रही।
आखिर में किताबों की हिफाजत करने के लिये सिर्फ आलिया ही बची।

She calls over the library wall to her friend Anis Muhammad, who owns a restaurant on the other side. “Can you help me save the books?”

आलिया ने दीवार के दूसरी ओर अपने दोस्त अनीस मोहम्मद - एक होटल के मालिक को आवाज लगायी। “क्या तुम किताबें बचाने में मेरी कुछ मदद कर सकते हो?”

“I can use these curtains to wrap them.”

“Here are crates from my shop.”

“Can you use these sacks?”

“The books must be saved.”

“मैं इन पर्दों में किताबें लपेट सकती हूं।”
“लो मेरी दुकान से गत्ते के डिब्बे और पेटियां ले लो।”
“क्या तुम इन बोरियों का इस्तेमाल कर सकती हो?”
“किताबों को तो किसी तरह बचाना ही है।”

All through the night, Alia, Anis, his brothers,
and shopkeepers and neighbors take the books
from the library shelves, pass them over the seven-foot wall,
and hide them in Anis's restaurant.

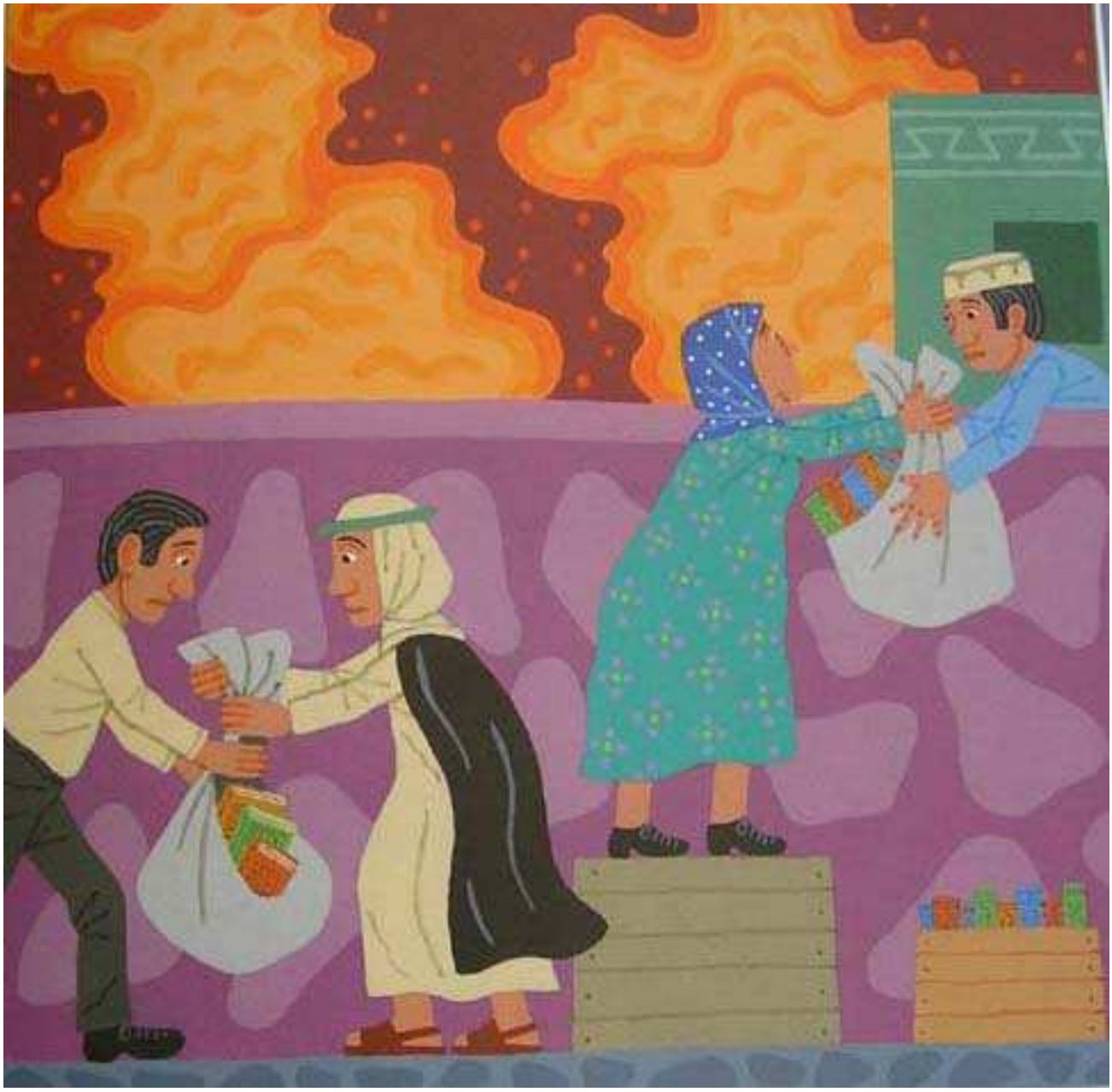

सारी रात आलिया, अनीस और उसके भाई
और आस-पास के दुकानदार और पड़ोसी
लाइब्रेरी की अल्मारियों से किताबें निकाल-निकाल कर
उन्हें सात फीट ऊंची दीवार के ऊपर से ढोकर
अनीस के होटल में जाकर उन्हें छिपाते रहे।

The books stay hidden and the war rages on.

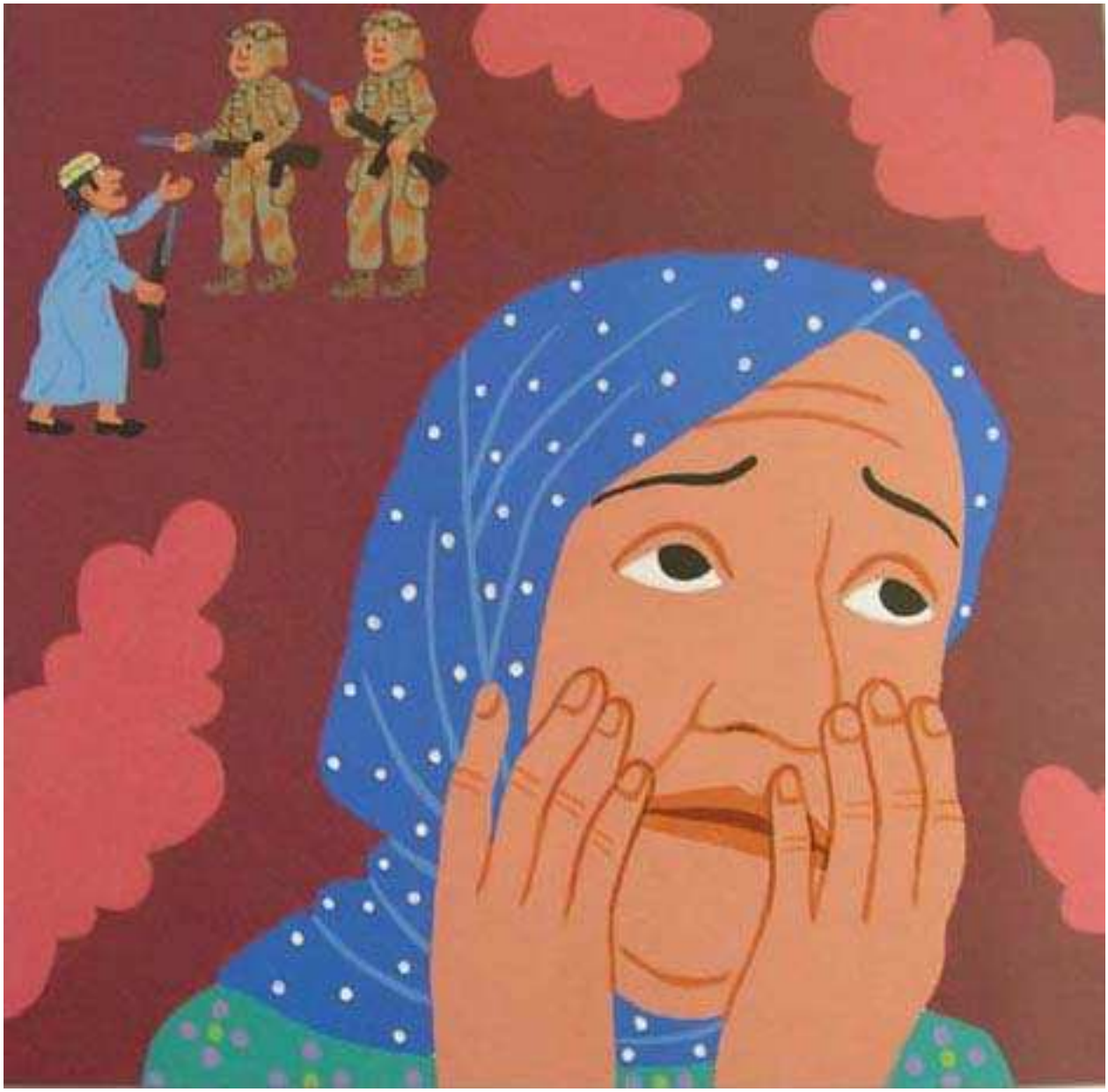

किताबें सुरक्षित तरीके से छिपी रहीं। युद्ध चलता रहा।

Then nine days later, a fire burns the library to the ground.

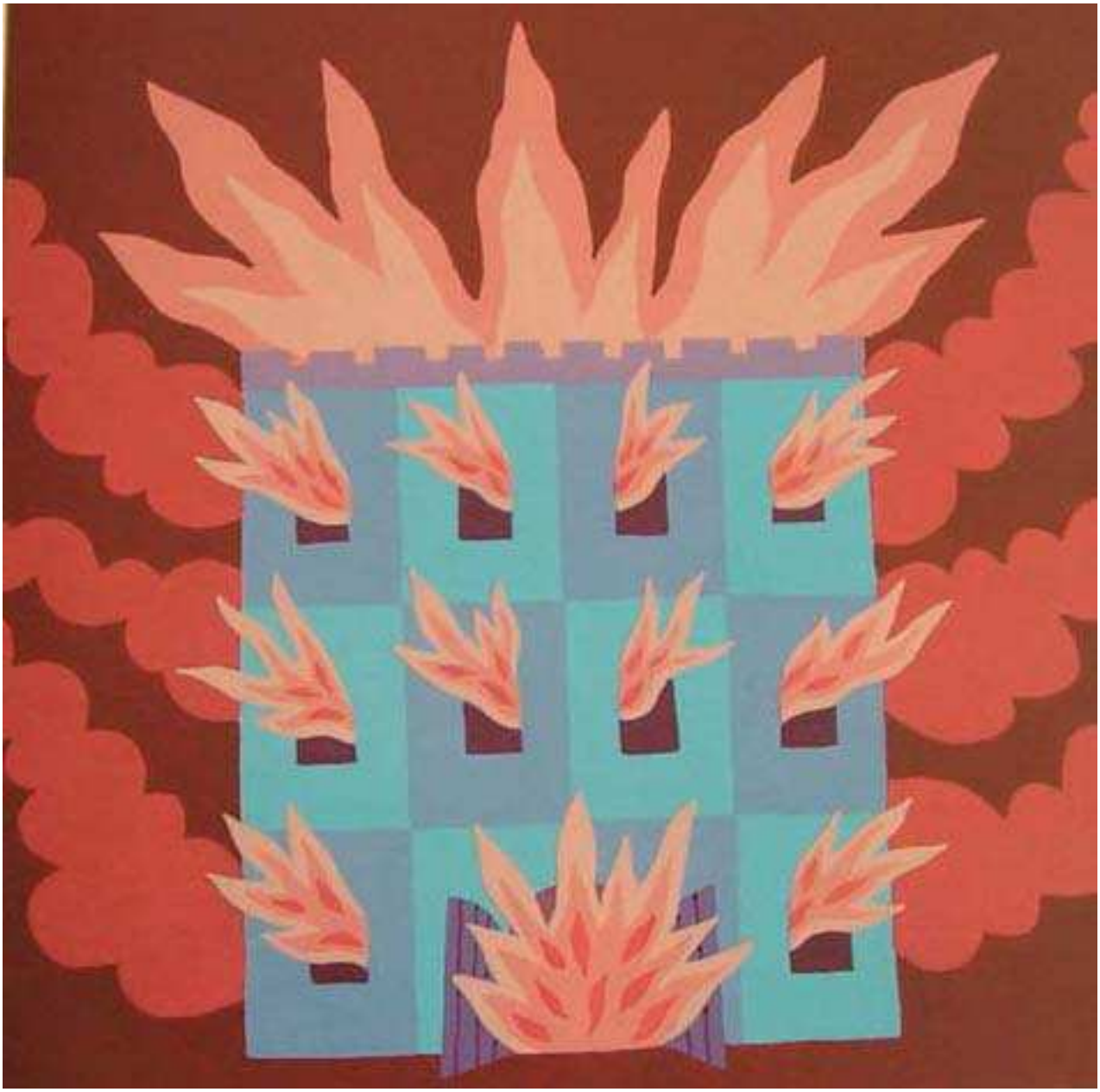

फिर नौ दिनों बाद लाइब्रेरी में आग लगी और वो जल कर खाक हो गयी।

The next day, soldiers come to Anis's restaurant.

"Why do you have a gun?" they ask.

"To protect my business," Anis replies.

The soldiers leave without searching inside.

They do not know that the whole of the library

is in my restaurant, thinks Anis.

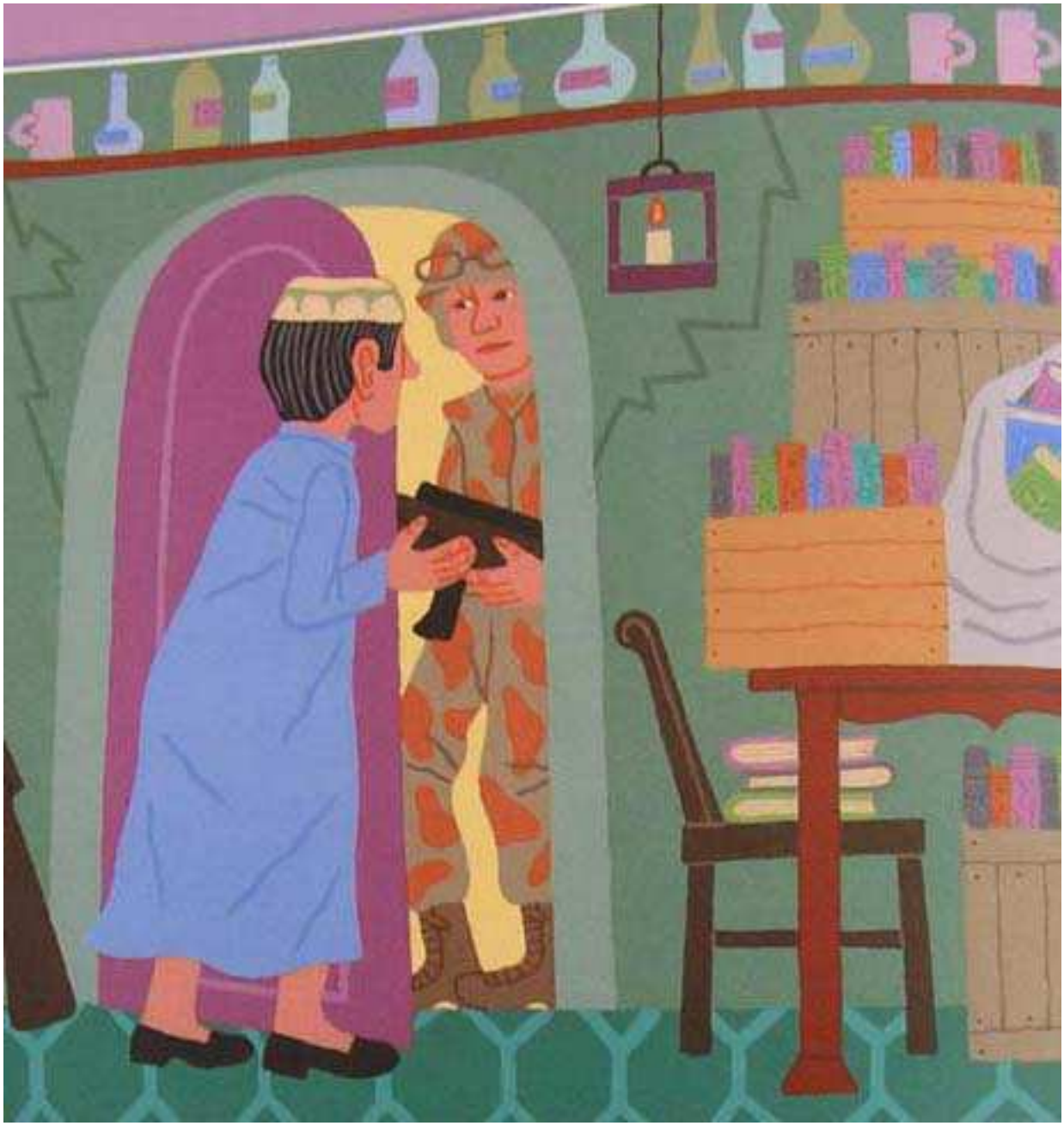

अगले दिन फौजी अनीस के होटल में आये।
"तुम्हारे पास यह बंदूक क्यों है?" उन्होंने पूछा।
"अपने धंधे की हिफाजत के लिये," अनीस ने जवाब दिया।
फौजी होटल की शिनाख्त किये बिना ही चले गये।
अनीस मन-सी-मन खुश हुआ, 'इन्हें क्या पता कि मेरे होटल में समूची लाइब्रेरी छिपी है।'

At last the beast of war moves on.

Alia knows that if the books are to be saved,

they must be moved again,

while the city is quite.

So she hires a truck to bring all thirty thousand books

to her house and to the houses of friends.

लड़ाई जारी रही।
आलिया को पता था कि किताबों की ठीक से हिफाजत के लिये
उन्हें शहर में शांति के समय किसी और जगह पर जाकर छिपाना होगा।
वो एक भाड़े के ट्रक में लाइब्रेरी की तीस हजार किताबों को अपने घर,
और अपने दोस्तों के घर में जाकर छिपाती है।

In Alia’s house the books are everywhere,

filling floors and cupboards and windows –

आलिया का सारा घर किताबों से भर जाता है।
जमीन पर, अल्मारियों में, खिड़कियों में सभी तरफ किताबें ही किताबें नजर आती हैं।

leaving barely enough room for anything else.

घर में बाकी किसी और चीज को रखने की जगह ही नहीं बची।

Alia waits.

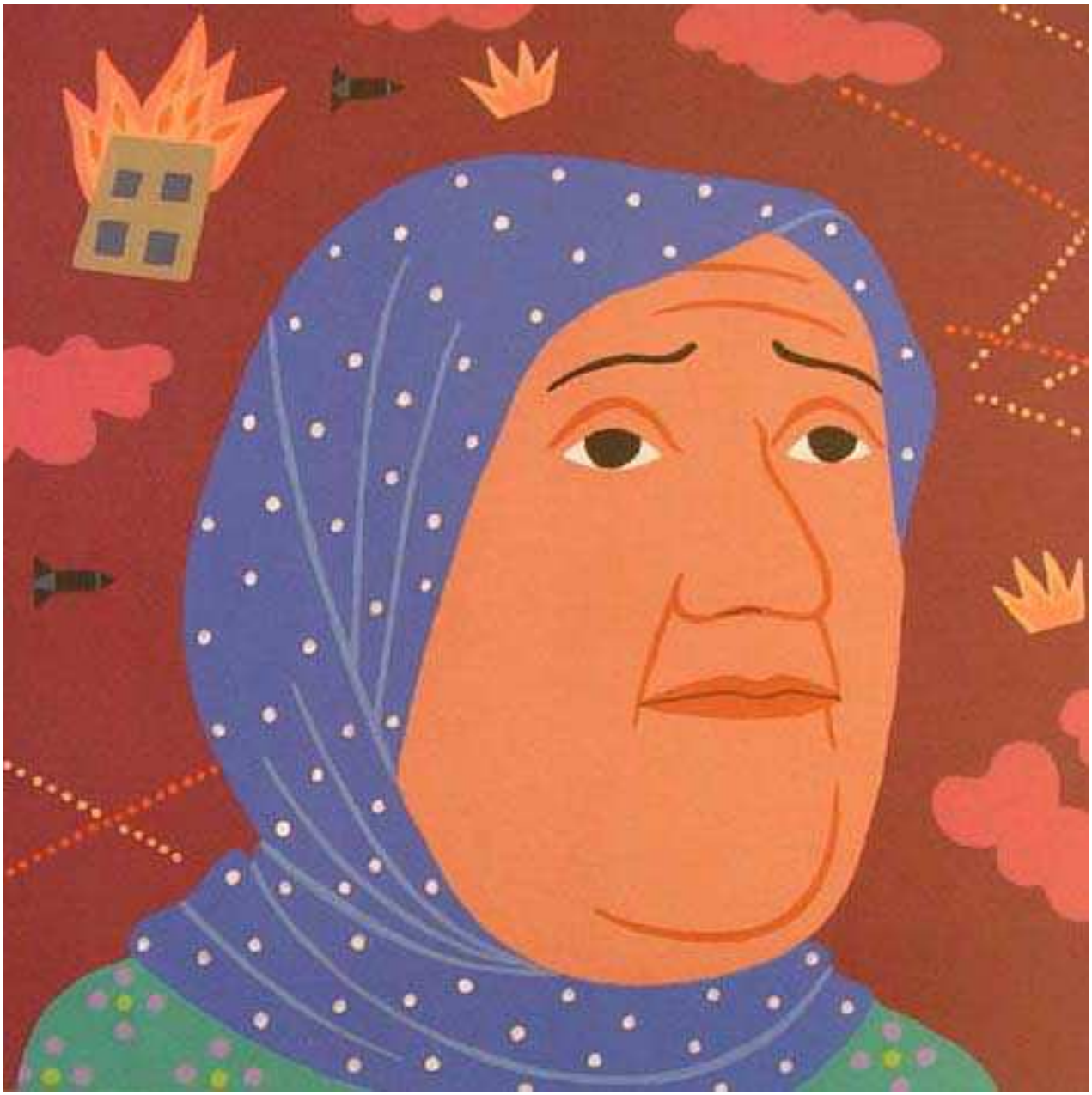

आलिया इंतजार करती है।

She waits for war to end.

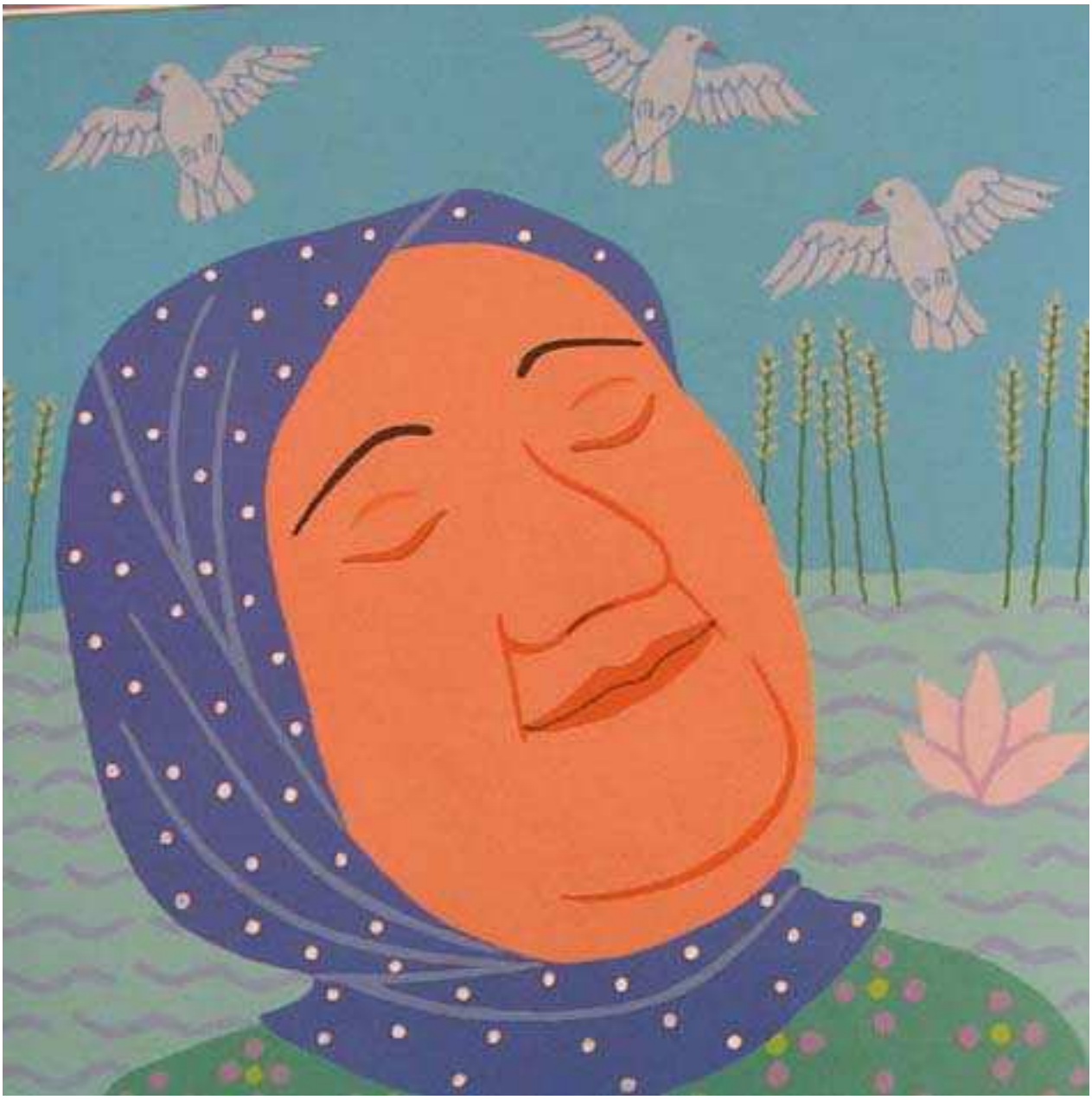

वो जंग के खत्म होने का इंतजार करती है।

She waits, and dreams of peace.

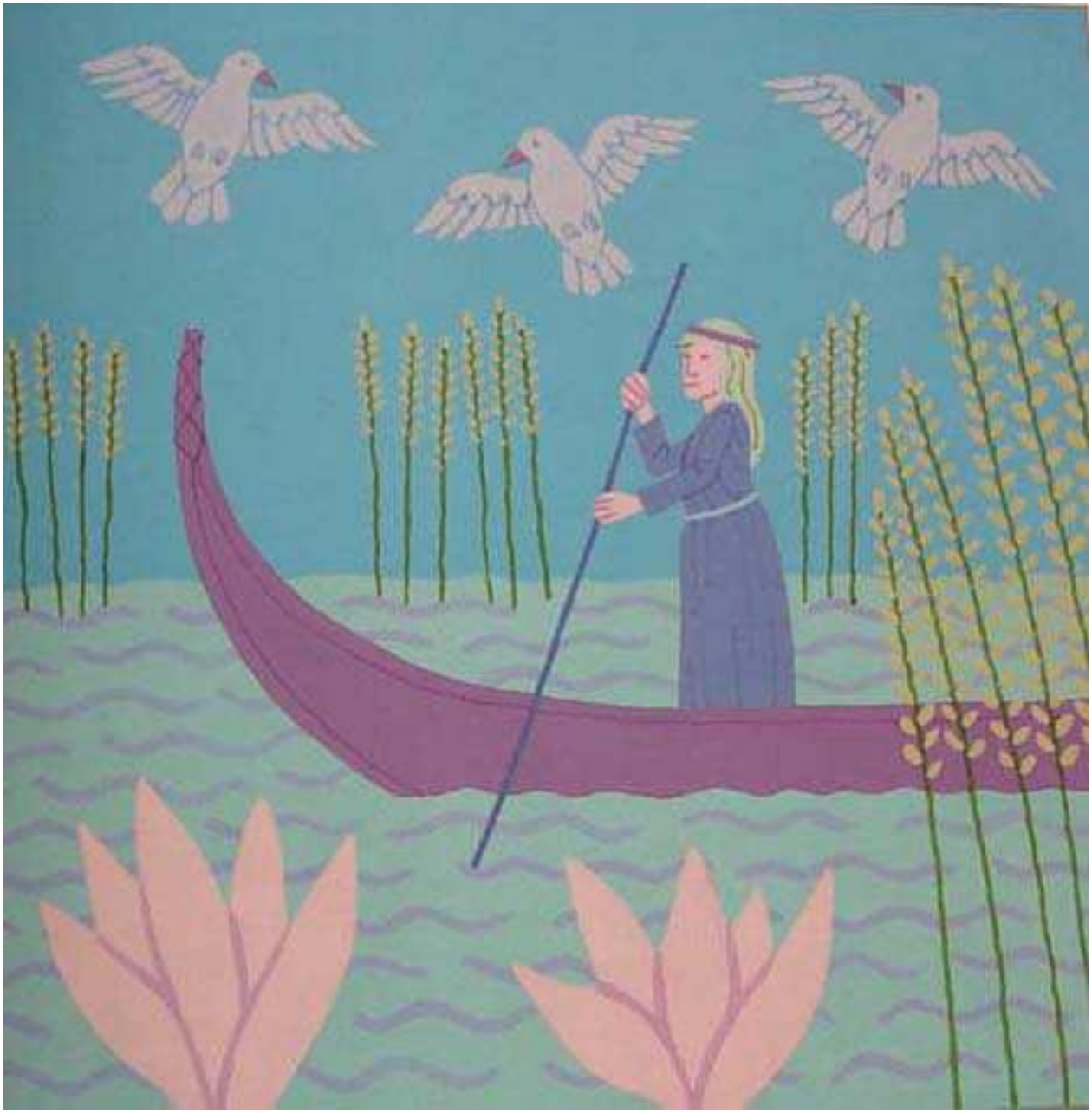

वो इंतजार करती है और अमन-चैन के सपना संजोती है।

She waits…

वो इंतजार करती है...

and dreams of a new library.

और एक नयी लाइब्रेरी का सपना संजोती है।

But until then, the books are safe –

safe with the librarian of Basra.

पर तब तक सारी किताबें सुरक्षित हैं -
बसरा की लाइब्रेरियन के घर में।

A Note from the Author

The invasion of Iraq reached Basra on April 6, 2003. With the help of friends and neighbors, Alia Mohammad Bake, chief librarian of Basra's Central Library, managed to rescue seventy percent of the library's collection before the library burned down nine days later.

These events were first revealed to the world by *New York Times* reporter Shaila K. Dewan, who heard about Alia and the library during a visit to Anis Muhammad's restaurant, the Hamdan – which is near the library and is known as one of the best in Basra. Shaila's translator said Anis had an incredible story to tell her about the war, so Shaila made an appointment to talk with him. Alia joined the discussion, and together they went on to share this amazing story.

Soon after the library was destroyed, Alia suffered a stroke and had heart surgery. But she is healing, and despite all, she is determined to see that the library is rebuilt.

भूमिका

ईराक में शुरू हुई लड़ाई बसरा में ६ अप्रैल २००३ को पहुंची। अपने दोस्तों और पड़ोसियों की मदद से आलिया मोहम्मद बकर ने बसरा की सेंट्रल लाइब्रेरी की सत्तर प्रतिशत किताबों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा। उसके नौ दिन बाद लाइब्रेरी जल कर खाक हो गयी।

इस घटना की पहली खबर न्यूयार्क टाइम्स की रिपोर्टर - शैला दीवान ने दी। शैला ने आलिया और लाइब्रेरी के बारे में पहली बार अनीस मोहम्मद के होटल हमदान में सुना। हमदान सेंट्रल लाइब्रेरी के पास स्थित है और वो बसरा का सबसे मशहूर होटल है। शैला के अनुवादक ने उससे कहा कि अनीस के पास युद्ध संबंधी एक गजब की कहानी है। शैला ने अनीस से समय तय किया जिससे वो कहानी सुन सके। आलिया भी उस चर्चा में शामिल थी। इस प्रकार उन तीनों ने मिलकर सारी दुनिया को यह अद्‌भुत कहानी सुनायी।

लाइब्रेरी में आग लगने के कुछ ही समय बाद आलिया को दिल का दौरा पड़ा और हार्ट-सर्जरी करवानी पड़ी। परंतु अब धीरे-धीरे आलिया की तबियत सुधर रही है। अपनी तबियत के बावजूद आलिया ने लाइब्रेरी के दुबारा निर्माण और उसे जल्दी शुरू करने का दृढ़ निश्चय किया है।